छठा अध्याय

श्रीपराशर उवाच

ततश्च नरका विप्र भूवोऽधः सलिलस्य च। पापिनो येषु पात्यन्ते ताञ्छृणुष्व महामुने ॥१॥
रौरवः सूकरो रोधस्तालो विशसनस्तथा। महाज्वालस्तप्तकुम्भो लवणोऽथ विलोहितः ॥२॥
रुधिराम्भो वैतरणिः कृमीशः कृमिभोजनः। असिपत्रवनं कृष्णो लालाभक्षश्च दारुणः ॥३॥
तथा पूयवहः पापो वह्निज्वालो ह्यधः शिराः। सन्दंशः कालसूत्रश्च तमश्चावीचिरेव च ॥४॥
श्वभोजनोऽथाप्रतिष्ठश्चाप्रचिश्च तथा परः। इत्येवमादयश्चान्ये नरका भृशदारुणाः ॥५॥
यमस्य विषये घोराः शस्त्राग्निभयदायिनः। पतन्ति येषु पुरुषाः पापकर्मरतास्तु ये ॥६॥
कूटसाक्षी तथाऽसम्यक्पक्षपातेन यो वदेत्। यश्चान्यदनृतं वक्ति स नरो याति रौरवम्॥७॥
भ्रूणहा पुरहन्ता च गोघ्नश्च मुनिसत्तम। यान्ति ते नरकं रोधं यश्चोच्छ्वासनिरोधकः॥८॥
सुरापो ब्रह्महा हर्ता सुवर्णस्य च सूकरे। प्रयान्ति नरके यश्च तैः संसर्गमुपैति वै ॥९॥
राजन्यवैश्यहा ताले तथैव गुरुतल्पगः। तप्तकुण्डे स्वसृगामी हन्ति राजभटांश्च यः ॥१०॥
साध्वीविक्रयकृद्बन्धपालः केसरिविक्रयी। तप्तलोहे पतन्त्येते यश्च भक्तं परित्यजेत्॥११॥
स्नुषां सुतां चापि गत्वा महाज्वाले निपात्यते। अवमन्ता गुरूणां यो यश्चाक्रोष्टा नराधमः ॥१२॥
वेददूषयिता यश्च वेदविक्रयिकश्च यः। अगम्यगामी यश्च स्यात्ते यान्ति लवणं द्विज ॥१३॥
चोरो विलोहे पतति मर्यादादूषकस्तथा ॥१४॥

विभिन्न नरकों तथा भगवन्न नामों का माहात्म्य वर्णन

श्रीपराशर महर्षि ने कहा— हे विप्र ! पृथिवी तथा उसके जल के नीचे नरक हैं। पापीजन उन्हीं नरकों में गिरा दिये जाते हैं। उन नरकों का वर्णन सुनो ॥१॥ रौरव, सूकर, रोध, ताल, विशसन, महाज्वाल, तप्तकुम्भ, लवण, विलोहित, रुधिराम्भ, वैतरणी, कृमीश, कृमिभोजन, असिपत्रवन, कृष्ण, लालाभक्ष, दारुण, पूयवह, पाप, वाह्निज्वाल, अध:शिरा, संदंश, कालसूत्र, तमस्, अवीचि, श्वभोजन, अप्रतिष्ठ और अप्रचि, ये सभी तथा इनके अतिरिक्त भी बहुत से भयङ्कर नरक हैं ॥२-५॥ ये सभी नरक, यमराज के शासनाधीन तथा शस्त्रभय एवं अग्निभय प्रदान करने वाले हैं। जो पापकर्म करने वाले पापीजन हैं वे इन्हीं नरकों में गिर पड़ते हैं ॥६॥ जो व्यक्ति कूटसाक्षी (झूठी गवाही देने वाला) होता है तथा पक्षपात करने के कारण जानकर भी ठीक-ठीक नहीं बोलता है, तथा जो मिथ्याभाषी है, वह रौरव नरक में जाता है ॥७॥ गर्भपात करने वाला, गाँवों को विनष्ट करने वाला, गोबध करने वाला तथा दूसरे का गला दबाकर मार डालने वाला ये सब रोध नामक नरक में जाते हैं ॥८॥ मदिरा पीने वाले, ब्रह्मघाती, सुवर्ण चुराने वाले तथा जो इन सबों का सङ्ग करते हैं, वे सब सूकरमुख नामक नरक में जाते हैं ॥९॥ क्षत्रिय तथा वैश्य का वध करने वाले ताल नरक में जाते हैं, गुरु पत्नी के साथ संसर्ग करने वाला तप्त कुण्ड में जाता है, बहन के साथ संसर्ग करने वाला तथा राजा के दूतों को मारने वाला भी तप्त कुण्ड में जाता है ॥१०॥ साध्वी स्त्री को बेचने वाला, कारागार रक्षक, घोड़ों को बेचनें वाला तथा अपने भक्त का परित्याग करने वाला, ये सब तप्तलोह कुण्ड में गिर जाते हैं ॥११॥ अपनी पुत्रवधू तथा पुत्री के साथ गमन करने वाले महाज्वाल नरक में गिरा दिए जाते हैं। गुरुओं का अपमान करने वाला, उनकी निन्दा करने वाला, वेदों की निन्दा करने वाला, वेदों को बेचने वाला, अगम्या गमन करने वाला, ये सबके सब लवण नरक में जाते हैं ॥१२-१३॥ चोर तथा मर्यादा का

देवद्विजपितृद्वेष्टा रत्नदूषयिता च यः । स याति कृमिभक्षे वै कृमीशे च दुरिष्टकृत् ॥१५॥
पितृदेवातिथींस्त्यक्त्वा पर्यश्नाति नराधमः । लालाभक्षे स यात्युग्रे शरकर्त्ता च वेधके ॥१६॥
करोति कर्णिनो यश्च यश्च खड्गादिकृन्नरः । प्रयान्त्येते विशसने नरके भृशदारुणे ॥१७॥
असत्प्रतिगृहीता तु नरके यात्यधोमुखे । अयाज्ययाजकश्चैव तथा नक्षत्रसूचकः ॥१८॥
वेगी पूयवहे चैको याति मिष्टान्नभुङ्नरः ॥१९॥
लाक्षामांसरसानां च तिलानां लवणस्य च । विक्रेता ब्राह्मणो याति तमेव नरकं द्विज ॥२०॥
मार्जारकुक्कुटच्छागश्ववराहविहङ्गमान् । पोषयन्नरकं याति तमेव द्विजसत्तम ॥२१॥
रङ्गोपजीवी कैवर्त्तः कुण्डाशी गरदस्तथा । सूची माहिषकश्चैव पर्वकारी च यो द्विजः ॥२२॥
आगारदाही मित्रघ्नः शाकुनिर्ग्रामयाजकः । रुधिरान्धे पतन्त्येते सोमं विक्रीणते च ये ॥२३॥
मखहा ग्रामहन्ता च याति वैतरणीं नरः ॥२४॥
रेतः पातादिकर्त्तारो मर्यादाभेदिनो हि ये । ते कृष्णे यान्तयशौचाश्च कुहकाजीविनश्च ये ॥२५॥
असिपत्रवनं याति वनच्छेदी वृथेव यः । औरभ्रिको मृगव्याधो वह्निज्वाले पतन्ति वै ॥२६॥
यान्त्येते द्विज तत्रैव ये चापाकेषु वह्निदाः ॥२७॥
व्रतानां लोपको यश्च स्वाश्रमाद्विच्युतश्च यः । सन्दंशयातनामध्ये पततस्तावुभावपि ॥२८॥
दिवा स्वप्ने च स्कन्दन्ते ये नरा ब्रह्मचारिणः । पुत्रैरध्यापिता ये च ते पतन्ति श्वभोजने ॥२९॥

उल्लंघन करने वाले, विलोहित नामक नरक में गिरा दिये जाते हैं ॥१४॥ देवता, ब्राह्मण तथा पिता से द्वेष करने वाला, रत्न को दूषित करने वाला, ये सब कृमिभक्ष नरक में जाते हैं, और अनिष्ट यज्ञ करने वाला कृमीश नरक में जाता है ॥१५॥ जो नराधम, पितृगण, देवगण तथा अतिथियों को छोड़कर उनसे पहले ही भोजन कर लेता है वह लालाभक्ष नरक में जाता है । बाण बनाने वाला बेधक नरक में जाता है ॥१६॥ कर्णी नामक बाण बनाने वाला, खड्ग इत्यादि को बनाने वाला, ये सब अत्यन्त भयङ्कर विशसन नरक में गिर पड़ते हैं ॥१७॥ असत् प्रतिग्रह (अनुचित उपायों से धन प्राप्त) करने वाले, अधोमुख नामक नरक में जाते हैं । अयाज्य याजक तथा झूठ-मुठ के नक्षत्र विद्या के बल पर धनार्जन करने वाला भी अधोमुख नरक में जाता है ॥१८॥ निष्ठुर कर्म करने वाला पूयवह नरक में जाता है । जो अकेले अच्छी वस्तुओं को खा लेता है, लाह, मांस, रस, तिल तथा नामक बेचने वाला, ब्राह्मण भी पूयवह नरक में जाता है ॥१९-२०॥ हे द्विज श्रेष्ठ ! बिल्ली, मूर्गा, बकरी, सूकर तथा पक्षियों को पालने वाला भी नरकगामी होता है ॥२१॥ पहलवानी से जीविका चलाने वाला, मल्लाह का काम करने वाला, जारजात के अन्न को खाने वाला, विषप्रदाता, चुगलखोर, स्त्री द्वारा असद् वृत्ति से कमाये धन पर जीने वाला, धन प्राप्त करने के लोभ से आमावस्या आदि को किए जाने वाले कर्मों को बिना तिथि के ही करने वाला ब्राह्मण, वाड में आग लगाने वाला, मित्र को मारने वाला, शकुन बताने वाला, गावों में घूम-घूमकर पौरोहित्य करने वाला, मदिरा बेचने वाला ये सब रुधिरान्ध नरक में गिर पड़ते हैं ॥२२-२३॥ यज्ञ तथा ग्राम को विनष्ट करने वाले वैतरणी नरक में जाते हैं ॥२४॥ वीर्यपात करने वाले, मर्यादा भङ्ग करने वाले, छलवृत्ति से जीवन निर्वाह करने वाले कृष्ण नामक नरक में जाते हैं ॥२५॥ व्यर्थ ही वन को काटने वाला असिपत्रवन नामक नरक में जाता है । गड़ेरिये तथा व्याधे वह्नि ज्वाला नरक में जाते हैं ॥२६॥ कच्चे घड़े अथवा ईंट को पकाने के लिए आग डालने वाले भी अग्नि ज्वाला नरक में ही जाते हैं ॥२७॥ व्रत का लोप करने वाले तथा अपने आश्रम से भ्रष्ट ये दोनों ही सन्दंश नामक नरक में जाते हैं।

एते चान्ये च नरकाः शतशोऽथ सहस्रशः। येषु दुष्कृतकर्माणः पच्यन्ते यातनागताः ॥३०॥
यथैव पापान्येतानि तथान्यानि सहस्रशः। भुज्यन्ते तानि पुरुषैर्नरकान्तरगोचरैः ॥३१॥
वर्णाश्रमविरुद्धं च कर्म कुर्वन्ति ये नराः। कर्मणा मनसा वाचा निरयेषु पतन्ति ते ॥३२॥
अधः शिरोभिर्दृश्यन्ते नारकैर्दिवि देवताः। देवाश्चाधोमुखान्सर्वानधः पश्यन्ति नारकान् ॥३३॥
स्थावरा कृमयोऽब्जाश्च पक्षिणः पशवो नराः। धार्मिकास्त्रिदशास्तद्वन्मोक्षिणश्च यथाक्रमम् ॥३४॥
सहस्रभागप्रथमा द्वितीयानुक्रमास्तथा। सर्वे ह्येते महाभाग यावन्मुक्तिसमाश्रयाः ॥३५॥
यावन्तो जन्तवः स्वर्गे तावन्तो नरकौकसः। पापकृद्याति परकं प्रायश्चित्तपराङ्मुखः ॥३६॥
पापानामनुरूपाणि प्रायश्चित्तानि यद्यथा। तथा तथैव संस्मृत्य प्रोक्तानि परमर्षिभिः ॥३७॥
पापे गुरूणि गुरुणि स्वल्पान्यल्पे च तद्विदः। प्रायश्चित्तानि मैत्रेय जगुः स्वायम्भुवादयः ॥३८॥
प्रायश्चित्तान्यशेषाणि तपः कर्मात्मकानि वै। यानि तेषामशेषाणां कृष्णानुस्मरणं परम् ॥३९॥
कृते पापेऽनुतापो वै यस्य पुंसः प्रजायते। प्रायश्चित्तं तु तस्यैकं हरिसंस्मरणं परम् ॥४०॥
प्रातर्निशि तथा सन्ध्यामध्याह्नादिषु संस्मरन्। नारायणमवाप्नोति सद्यः पापक्षयान्नरः ॥४१॥
विष्णुसंस्मरणात्क्षीणसमस्तक्लेशसञ्चयः। मुक्तिं प्रयाति स्वर्गाप्तिस्तस्य विघ्नोऽनुमीयते ॥४२॥
वासुदेवे मनो यस्य जपहोमार्चनादिषु। तस्यान्तरायो मैत्रेय देवेन्द्रत्वादिकं फलम् ॥४३॥
क्व नाकपृष्ठगमनं पुनरावृत्तिलक्षणम्। क्व जपो वासुदेवेति मुक्तिबीजमनुत्तमम् ॥४४॥
तस्मादहर्निशं विष्णुं संस्मरन्पुरुषो मुने। न याति नरकं मर्त्यः संक्षीणाखिलपातकः ॥४५॥

दिन में सोते समय (स्वप्न दोष) में वीर्य पात करने वाले तथा अपने पुत्रों से पढ़ने वाले, श्वभोजन नरक में जाते हैं।।२९।। ये सभी तथा अन्य सैकड़ों हजारों नरक हैं, जिनमें पापीजन यातना भोगने के लिए गिर पड़ते हैं ॥३०॥ इन पापों के अतिरिक्त हजारों पाप हैं जिन सबों का फल पापियों को भोगना पड़ता है ॥३१॥ जो मनुष्य अपने वर्ण तथा आश्रम के विरुद्ध कर्मों को मन, वाणी अथवा कर्म से करते हैं, वे नरकों में जाते हैं ॥३२॥ नरकों में नीचे शिर करके रहने वाले नारकियों को स्वर्ग लोक में देवता दिखायी पड़ते हैं, और देवता नीचे की ओर नारकियों को देखते हैं ॥३३॥ नरक भोग करने के पश्चात् पापीगण स्थावर, कृमी, जलचर, पक्षी, पशु, धार्मिक मनुष्य देवता, मुमुक्षु आदि होकर जन्म लेते हैं ॥३४॥ इन सबों में स्थावर से लेकर मुमुक्षु पर्यन्त पूर्व-पूर्व जीवों की अपेक्षा उत्तरोत्तर प्राणी हजार गुना अधिक हैं ॥३५॥ स्वर्ग में जितने जीव हैं, उतने ही नरक में भी हैं। अपने पापों का प्रायश्चित नहीं करने वाले नरक में जाते हैं ॥३६॥ जिस-जिस पाप के अनुसार जो-जो प्रायश्चित्त होता है उनको ही महर्षियों ने वेदार्थ का स्मरण करके बतलाया है ॥३७॥ स्वायम्भुव मनु आदि ने बड़े पापों के लिए बड़े और छोटे पापों के लिए छोटे प्रायश्चित्तों को बतलाया है ॥३८॥ सभी प्रायश्चित तपस्या स्वरूप है, और उन सभी प्रायश्चित में भगवान् का स्मरण सर्वश्रेष्ठ प्रायश्चित्त है ॥३९॥ जिन पापों के करने से अनुताप होता है, उन्हीं के लिए प्रायश्चित करने का विधान है; किन्तु श्रीभगवान् का स्मरण तो एकमात्र सर्वश्रेष्ठ प्रायश्चित्त है ॥४०॥ प्रात:काल, रात्रि में, सायंकाल, दोपहर आदि में भगवान् नारायण का स्मरण करने वाला शीघ्र ही पापों से मुक्त हो जाता है ॥४१॥ भगवान् विष्णु का स्मरण करने से जिसका समस्त पाप राशि विनष्ट हो गया है, वह मोक्ष को प्राप्त कर लेता है; स्वर्ग की प्राप्ति तो उसके लिए विघ्न के समान है ॥४२॥ हे मैत्रेय ! जप, होम तथा पूजन के समय जिसका मन भगवान् वासुदेव में लगा रहता है, उसके लिए देवेन्द्र इत्यादि पद की प्राप्ति विघ्न स्वरूप है ॥४३॥ पुनर्जन्म, प्रदान करने वाले स्वर्ग की प्राप्ति कहाँ और

मनः प्रीतिकरः स्वर्गो नरकस्तद्विपर्ययः । नरकस्वर्गसंज्ञे वै पापपुण्ये द्विजोत्तम ॥४६॥
वस्त्वेकमेव दुःखाय सुखायेर्ष्यागमाय च । कोपाय च यतस्तस्माद्वस्तु वस्त्वात्मकं कुतः ॥४७॥
तदेव प्रीतये भूत्वा पुनर्दुःखाय जायते। तदेव कोपाय यतः प्रसादाय च जायते ॥४८॥
तस्माद्दुःखात्मकं नास्ति न च किञ्चित्सुखात्मकम् । मनसः परिणामोऽयं सुखदुःखादिलक्षणः ॥४९॥
ज्ञानमेव परं ब्रह्म ज्ञानं बन्धाय चेष्यते। ज्ञानात्मकमिदं विश्वं न ज्ञानाद्विद्यते परम्॥५०॥
विद्याविद्येति मैत्रेय ज्ञानमेवोपधारय ॥५१॥
एवमेतन्मयाख्यातं भवतो मण्डलं भुवः । पातालानि च सर्वाणि तथैव नरका द्विज॥५२॥
समुद्राः पर्वताश्चैव द्वीपा वर्षाणि निम्नगाः । संक्षेपात्सर्वमाख्यातं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥५३॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे द्वितीयेंऽशे षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

सातवाँ अध्याय

श्रीमैत्रेय उवाच

कथितं भूतलं ब्रह्मन्ममैतदखिलं त्वया। भुवर्लोकादिकाँल्लोकाञ्छ्रोतुमिच्छाम्यहं मुने ॥१॥
तथैव ग्रहसंस्थानं प्रमाणानि यथा तथा। समाचक्ष्व महाभाग तन्मह्यं परिपृच्छते।॥२॥

कहाँ मुक्ति प्राप्ति के बीज स्वरूप भगवान् वासुदेव के नाम का स्मरण ! दोनों में कोई समता नहीं है ॥४४॥ अतएव हे मुने ! निरन्तर भगवान् विष्णु का स्मरण करने वाला पुरुष सभी पापों के विनष्ट हो जाने के कारण कभी भी नरक में नहीं जाता है ॥४५॥ हे द्विजोत्तम ! मन को अच्छा लगने वाला स्वर्ग है, नरक ठीक उसके विपरीत है, वही नरक है । अतएव पुण्य और पाप का ही दूसरा नाम स्वर्ग एवं नरक है ॥४६॥ जब एक ही वस्तु सुख, दुःख, ईर्ष्या तथा कोप का कारण है; तो फिर उस वस्तु में वस्तुत्व कहाँ रह गया ?॥४७॥ एक ही वस्तु सुखप्रद होकर पुनः दुःखप्रद हो जाती है और वह कोप तथा प्रसन्नता का कारण चूकि बन जाती है, अतएव कोई भी वस्तु न तो सुखात्मक है और न तो दुःखात्मक । सुख तथा दुःख तो मन के परिणाम हैं ॥४८-४९॥ ज्ञान ही ब्रह्म है, ज्ञान ही संसार के बन्धन का कारण है, यह सम्पूर्ण जगत् ज्ञानात्मक है, ज्ञान से भिन्न कुछ नहीं है ॥५०॥ हे मैत्रेय ! विद्या तथा अविद्या को भी ज्ञान ही समझो ॥५१॥ हे द्विज मैंने इस तरह तुम्हें सम्पूर्ण भूमण्डल, सभी पाताल तथा नरकों का वर्णन सुनाया॥५२॥ समुद्रों, पर्वतों, द्वीपों, वर्षों, नदियों का भी संक्षेप में वर्णन किया अब क्या सुनना चाहते हो ?॥५३॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के दूसरे अंश के छठे अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥६॥

भूर्भुवः आदि ऊपर के लोकों का वर्णन

श्रीमैत्रेय महर्षि ने कहा— हे ब्रह्मन् ! आपने सम्पूर्ण पृथिवी का वर्णन किया अब मैं भुवर्लोक आदि का वर्णन सुनना चाहता हूँ ॥१॥ ग्रहों के संस्थान तथा उनके प्रमाण जैसे हैं उन सबों के विषय में मैं पूछ रहा हूँ उसे आप सुनायें ॥२॥ **श्रीपराशर महर्षि ने कहा—** सूर्य, चन्द्रमा की किरणों से जितनी दूर तक समुद्र, नदी तथा